हिन्दी -(प्रतिष्ठा) प्रथम-पत्र

हिन्दी साहित्य का इतिहास, भाग-3

प्रश्न - आदिकाल के नामकरण की समस्या पर प्रकाश डालें

उत्तर-(२) शेषभाग राहुल सांकृत्यायन का मत :

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने 8 वीं शती से लेकर 13 वीं शती तक के काव्य में दो प्रकार की प्रवृत्तियों की प्रमुखता देखकर इस काल को 'सिद्ध-सामंत युग' कहा है। इनके अनुसार इस कालखण्ड में उपलब्ध साहित्य में दो भाव पाये जाते हैं-

(i) सिद्धों की वाणी

(ii) सामंतों की स्तुति

सिद्धों की वाणी के अन्तर्गत बौद्ध तथा नाथ सिद्धों एवं जैन मुनियों की उपदेशमूलक, हठयोगपरक रचनाएँ हैं; जिनमें यद्यपि धर्म, तत्व का निरूपण प्रमुखता से हुआ है, किन्तु उनमें आध्यात्मिकता के साथ-साथ साहित्यिकता का समावेश भी है,

सामंतों की स्तुति के अन्तर्गत सम्पूर्ण चारण साहित्य रखा जा सकता है। रासो ग्रंथों के ~~सं~~ रचयिताओं ने अपने-अपने आश्रयदाता, राजाओं एवं सामन्तों की प्रशंसा करते हुए उनकी वीरता, ~~उदा~~ उदारता एवं नीतिकुशलता के जो अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किये, वही इन ~~रासो~~ ग्रंथों का ~~वर्ण्य~~ वर्ण्य-विषय हैं।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने इस नामकरण पर आपत्ति करते हुए कहा है कि इस नामकरण से उन अत्यन्त महत्वपूर्ण लौकिक प्रवृत्तियों का कुछ भी ~~[illegible]~~ आभास नहीं मिलता, जो परवर्ती काव्य में भी बहुत व्यापक रूप से प्रकट हुई हैं, इसके अतिरिक्त इस नाम से आदिकाल की किसी साहित्यिक प्रवृत्ति का भी संकेत नहीं मिलता है सिद्ध युग कहने से धार्मिक-प्रवृत्ति का और

सामंत युग कहने से रचनीतिक प्रवृत्ति का संकेत मिलता है।

(3) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का मत :-

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इस काल को 'बीज-वपन काल' कहा है। इस नाम से ऐसा आभास होता है कि हिन्दी साहित्य में उपलब्ध साहित्यिक प्रवृत्तियों का बीज इस काल में बोया गया था, अर्थात परवर्ती साहित्य में प्राप्त होने वाली प्रवृत्तियाँ इस काल में प्रारम्भ हुई थीं, परन्तु यह एक भ्रांतिपूर्ण धारणा है। वस्तुस्थिति यह है कि इस काल में उपलब्ध होने वाली प्रवृत्तियाँ इससे पूर्ववर्ती प्राप्त होने वाला अपभ्रंश, प्राकृत साहित्य की प्रवृत्तियों का ही विकसित रूप है। भाषा की दृष्टि से अवश्य यहाँ परिवर्तन हुआ, क्योंकि हिन्दी भाषा अपना रूप ग्रहण कर रही थी, किन्तु साहित्यिक प्रवृत्तियों की दृष्टि से यह पूर्ववर्ती परम्परा का ही विकास है, ऐसी स्थिति में 'बीज-वपन काल' नाम को स्वीकार नहीं किया जा सकता।

(4) डॉ० रामकुमार वर्मा का मत :-

डॉ० रामकुमार वर्मा इस कालखण्ड के दो विभाग करते हैं।—

(i) संधिकाल (संवत 750 वि० - 1000 वि०)
(ii) चारणकाल (संवत 1000 - 1375 वि०)

इस नामकरण में आदिकाल को पीछे की ओर ले जाने की प्रवृत्ति परिलक्षित हो रही है, हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ 7 वीं - 8 वीं शताब्दी से मानना वस्तुतः एक भ्रांति है, जिसके अनुसार हिन्दी को अपभ्रंश से अभिन्न मानकर अपभ्रंश की रचनाओं को हिन्दी में समेट लिया गया है। डॉ० वर्मा का यह संधिकाल भी इसी

भ्रांति का परिणाम है, अतः इसे आचार्य शुक्ल के काल-विभाजन का परिष्कृत रूप नहीं कहा जा सकता। इस नाम में भी वही त्रुटि है, जो मिश्रबंधुओं के आरम्भिक काल में है।

चारण काल में और वीरगाथा काल में कोई तात्विक अंतर नहीं है, क्योंकि चारण वे कवि कहे जाते थे जिन्होंने वीरगाथाएँ लिखीं। शुक्ल जी ने रचनाओं को प्रधानता देते हुए इस काल का नाम वीरगाथा काल रखा जबकि डॉ० वर्मा ने रचयिताओं को प्रमुखता प्रदान करते हुए चारण काल कहा। वस्तुस्थिति यह है कि इन दोनों ही नामों में कोई मूलभूत अन्तर नहीं है। वीरगाथा काल के ग्रन्थों की प्रामाणिकता संदिग्ध होने के कारण दोनों ही नाम अनुचित है।

पता -
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग - हिन्दी (S.R.A.P.C)
मो० न० - 7909046087
दिनांक - 08 . 02 . 2023